जब कोई बिना सुसमाचार सुने मरता है तो क्या वह दोषी ठहरता है?

फ्रैंकलिन के नोट्स

एक प्रश्न पूछा गया : परमेश्वर उन लोगों का न्याय कैसे करेगा, जिन्हें न तो सुसमाचार सुनने का अवसर मिला और न ही उनके पास यीशु को ग्रहण करने का कोई मौका आया। क्या वे स्वर्ग जाएंगे?

यह बहुत कठिन प्रश्न है और इसका उत्तर भिन्न-भिन्न धर्म वैज्ञानिक मतों को रखने वाले लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से दिया है। मेरा उत्तर यह है।

I. परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति के पहले से ही अपने **परिवार को चुन रखा** था और **उनके नाम** उसने **"जीवन की पुस्तक"** में लिखे लिए थे।

इफिसियों 1:3-6 हमारे प्रभु यीशु मसीह का **पिता** परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में **सब प्रकार की आत्मिक आशिषों** से आशीषित किया है। 4 उसने हमें **जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया**

- सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर सबसे पहले एक **पिता** है। वह चाहता था और उसने अपनी संतानों को चुना, तथा इससे पहले कि वे उत्पन्न होते उसने उन **सब के** नाम अपनी जीवन की पुस्तक में लिख लिए थे।

फिलिप्पियों 4:3 ... इन स्त्रियों ने ... मेरे साथ और क्लेमेन्स तथा मेरे **अन्य सहकर्मियों** सहित **जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं**, सुसमाचार के लिए संघर्ष किया है।

उसने अपने शिष्यों से कहा : फिर भी इस बात पर आनन्दित मत होओ कि आत्माएं तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस बात से **आनन्दित होओ** कि **तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।** लूका 10:20

यदि परमेश्वर कुछ लिखने का निर्णय लेता है -> उसमें फिर न तो कभी कोई बदलाव होगा और न वह मिटाया जाएगा। वह वहाँ अनंतकाल के लिए लिख लिया गया है।

यशायाह 46:9-10 **मैं ही परमेश्वर हूँ** और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। **मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ** जो अब तक नहीं हुई। **मेरी युक्ति स्थिर रहेगी।**

- आपके लिए उसके पास एक आरम्भ है और अंत पहले ही से निर्धारित किया जा चुका है।

यशायाह 55:11 **उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा,** और **जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।**

प्रकाशितवाक्य 3:5 वह **जो जय पाए,** उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा। **मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से न मिटाऊंगा,** वरन् **अपने पिता** और उसके स्वर्गदूतों के समक्ष **उसका नाम मान लूंगा।**

जय पानेवाला कौन है? ... जिसका यह विश्वास है कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है। 1 यूहन्ना 5:5

1 यूहन्ना 5:4 **जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है** (वह उसका पुत्र है), **वह संसार पर जय प्राप्त करता है;** और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है **हमारा विश्वास है।**

- **हमारा विश्वास** परमेश्वर की ओर से भेंट है : 2 पतरस 1:1 ... उन लोगों के नाम जिन्होंने ... हमारे समान (पतरस और शिष्यों के समान) बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है।**

इसलिए, **जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह** उस **विश्वास** के द्वारा जो उन्होंने प्राप्त किया है (2 पतरस 1:1), **संसार पर जय प्राप्त करता है** (1 यूहन्ना 5:4) और उनके नाम **जीवन की पुस्तक** में से **कभी नहीं मिटाए जाएँगे।** प्रकाशितवाक्य 3:5

- **परमेश्वर से उत्पन्न** का अर्थ इस संसार में हमारे **स्वभाविक जन्म** से है क्योंकि **उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया था,** जिसने इस बात को निश्चित किया कि हमारा जन्म होता।

- **उत्पन्न होना** : γεννάω (गे-ना-ओ) पैदा करना; प्रजनन करना; जनना (यूनानी शब्दकोश)। नीचे दिए गए पदों में इसी शब्द का प्रयोग किया गया है :
  यूहन्ना 1:13 वे न तो लहू से स्वाभाविक जन्म, न शरीर की इच्छा से स्वाभाविक

जन्म, न मनुष्य की इच्छा से स्वाभाविक जन्म, परन्तु **परमेश्वर से उत्पन्न** हुए हैं ट्रू ट्रांसलेशन गाइडलाइन्स के अनुसार यह भी **स्वाभाविक जन्म** है।

- यूहन्ना 3:3 में **शब्द** "नए सिरे से" के मूलशब्द ανωθεν̓ का **शाब्दिक अर्थ** "**ऊपर से**" है, यह शब्द παλιν **नहीं** है जिसका अर्थ "नए सिरे से या फिर से" होता, अतः यह पद इस प्रकार पढ़ा जाना चाहिए : यदि कोई **ऊपर से** न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

- 1 यूहन्ना 2:29; 5:1 और 18 ये सब **पहले या स्वाभाविक जन्म** γεννάω (गे-ना-ओ) की ओर इंगित करते हैं, **आत्मिक जन्म की ओर नहीं।**
  कृपया www.treasurehisword.com के पृष्ठ 3 पर "ऊपर से जन्मा" पर नोट्स देखें।

- वे जिनके नाम **जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए**
  - "उस पशु" की पूजा करेंगे प्रकाशितवाक्य 13:8; 17:8.
  - उन्हें "आग की झील में डाला" जाएगा प्रकाशितवाक्य 20:15
  - नया यरूशलेम : परन्तु उसमें **कोई** ... किसी रीति से प्रवेश **न** करेगा, पर **केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।** प्रकाशितवाक्य 21:27

II. परमेश्वर ने न सिर्फ **हमें चुना है** उसने हमें (इफिसियों 1:5) अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार भी अपने लिये **पहले से ठहराया** कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके **लेपालक** अर्थात परिपक्व **पुत्र** हों। यदि परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया है, तो वह हमारा निश्चित गंतव्य है। सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर महान परमेश्वर है।

III. अपने बच्चों को छुड़ाने और उनके पापों को क्षमा करने के लिए ... यीशु मसीह ने पापों के दंड के लिए पवित्र परमेश्वर की धर्मी मांगों को क्रूस पर बहाए **अपने लहू** के द्वारा पूरी तरह से संतुष्ट किया।

इब्रानियों 9:24-27 क्योंकि मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्रस्थान में, जो सच्चे पवित्रस्थान का प्रतिरूप मात्र है, प्रवेश नहीं किया, वरन् स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि अब हमारे लिए (जो उसके हैं। 2 तीमु 2:19) **परमेश्वर के सामने प्रकट हो**। ... परन्तु अब युग के अन्त में **वह एक ही बार प्रकट हुआ कि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे।**

इब्रानियों 2:11-17 क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, **सब एक ही मूल से हैं**; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। वह कहता है, "मैं तेरा नाम **अपने भाइयों** को सुनाऊँगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा।" ... और फिर यह, "देख, **मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।**" अतः जिस प्रकार **बच्चे** (उसकी संतान) मांस और लहू में सहभागी हैं, तो वह आप भी उसी प्रकार उनमें सहभागी हो गया, ... 17 इस कारण उसके लिए यह आवश्यक हुआ कि **सब बातों में अपने भाइयों के समान बने** (वह अपने बच्चों को इससे पहले कि उनका नया जन्म होता, अपने भाई और बहन कहता है), जिससे कि वह परमेश्वर से सम्बन्धित बातों में दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हो सके और लोगों के पापों का **प्रायश्चित्त करे** (पर्याप्त बलिदान)।

2 कुरिन्थियों 5:19 परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ **संसार का मेलमिलाप** कर लिया, और **उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया**

- **सब के पापों की क्षमा मिल चुकी है** और बलिदान चढ़ाया जा चुका है। इस बात पर **विश्वास न करने** का अर्थ अनंत जीवन के मुफ्त वरदान से **इनकार करना** है।

- प्रभु यह जानता है कि **कौन उस पर विश्वास करेगा** और **कौन उस पर विश्वास नहीं करेगा**, अर्थात वह जो **ऊपर से जन्मा नहीं होगा।**

प्रभु – यह जानता है कि उसके कौन हैं –> जो उस पर विश्वास करेंगे – > या जो यदि सुसमाचार सुनेंगे तो विश्वास करेंगे – **यीशु के लहू ने उनके पापों को क्षमा कर दिया है। वे स्वर्ग में होंगे।**

IV. उसने (1) उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं और (2) उसने अपने पुत्र को भेजा कि वह अपने लहू के द्वारा उसकी संतानों को छुड़ाए, अतः सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर कभी **असफल नहीं होता।**

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर सर्वोच्च है। परमेश्वर की इच्छा **निश्चय ही पूर्ण होगी**, भले ही कोई या कुछ लोग बिना सुसमाचार सुनें मृत्यु को प्राप्त कर लें।

2 तीमुथियुस 2:19 फिर भी **परमेश्वर की पक्की नींव अटल** रहती है, जिस पर यह **छाप** लगी है, "**परमेश्वर अपने लोगों को पहचानता है,**"

वे **जो उसके अपने** हैं – जिनके नाम "जीवन की पुस्तक" में लिखे गए हैं – जो बिना सुसमाचार सुनें मर गए – वे सुसमाचार सुनेंगे और उस पर विश्वास करेंगे और बचाए जाएंगे जैसा इन अगले पदों में बताया गया है जो इस बात को प्रकट करते है कि प्रभु अपने बच्चों के लिए कहाँ तक जाएगा।

1 पतरस 3:18-19 मसीह भी **सब के** पापों के लिए **एक ही बार मर** गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी **जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए।** शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परन्तु आत्मा के भाव से जिलाया गया। 19 उसी में **उसने जाकर उन बन्दी आत्माओं को सन्देश सुनाया**

1 पतरस 4:6 इसलिए **मरे हुओं को** भी **सुसमाचार** इस अभिप्राय से **सुनाया गया** कि - यद्यपि शरीर में उनका न्याय मनुष्यों के अनुसार हो - **वे आत्मा में परमेश्वर के इच्छानुसार जीवित रहें।**

यह मुझे आश्वस्त करता हैं कि वे **जो उसके अपने हैं** और जिन्हें सुसमाचार सुनने का अवसर नहीं मिला, उन्हें उस बात का **दंड नहीं दिया जाएगा** जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था। **इसमें गर्भपात किए हुए बच्चे भी शामिल हैं।**

अब इसे देखें : प्रेरित पौलुस कहता है कि **सब ने यह सुना** और **जाना** है कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर है।

रोमियों 10:18 परन्तु मैं कहता हूँ, **क्या उन्होंने नहीं सुना?** सुना तो **अवश्य है**; क्योंकि लिखा है, "उनके **स्वर** सारी पृथ्वी पर, और उनके **वचन** जगत की छोर तक पहुँच गए हैं।" यह भजन 19:4 का उद्धरण है।

भजन 19:1-4 **आकाश** परमेश्वर की **महिमा का वर्णन कर रहा है**; और **आकाशमण्डल** उसकी हस्तकला को **प्रगट कर रहा है।** 2 दिन से दिन **बातें करता है**, और रात को रात **ज्ञान** सिखाती है। 3 न तो कोई बोली है और न कोई भाषा **जहाँ उनका शब्द**

सुनाई नहीं देता है। [4] **उनका स्वर सारी पृथ्वी** पर गूँज गया है, और उनके **वचन** जगत की छोर तक पहुँच गए हैं।

रोमियों 1:20-21 क्योंकि जगत की सृष्टि से ही परमेश्वर के अदृश्य गुण, अनन्त सामर्थ्य और परमेश्वरत्व उसकी रचना के द्वारा **समझे** जाकर **स्पष्ट दिखाई देते** हैं, इसलिए **उनके पास कोई बहाना नहीं।** [21] क्योंकि, यद्यपि **वे परमेश्वर को जानते थे**, फिर भी उन्होंने उसे न तो परमेश्वर के उपयुक्त सम्मान, और न ही धन्यवाद दिया; वरन् **वे अनर्थ कल्पनाएं करने लगे, और उनका निर्बुद्धि मन अन्धकारमय हो गया।**

- आकाश परमेश्वर की महिमा और उसके प्रताप का वर्णन करता है। हर एक जन अपने मन की गहराई में जानता है कि एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर है लेकिन जिनका "जन्म ऊपर से" नहीं हुआ है, उनकी समझ और उनका **मन अन्धकारमय हो गया है।**

यूहन्ना 1:9 यह बताता है कि यीशु : वह सच्ची ज्योति है जो **हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है**, जगत में आनेवाली थी।

- स्वाभाविक जन्म पाए हुए वे लोग जो ऊपर से जन्मे, चुने हुए, पहले से ठहराए हुए और **जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं**, वे अपने मन और हृदय में यह विश्वास करते हैं कि एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर है, भले ही उन्होंने कभी सुसमाचार न सुना हो। और उनके पाप क्षमा किए जा चुके हैं (2 कुरि. 5:18-19 और 21) और इसलिए वे धर्मी ठहराए जा चुके हैं (रोमियों.5:18 कुलुस्सियों 2:13-14), और **उनके पास अनंत जीवन है**।

- वे जो परमेश्वर से उत्पन्न **नहीं हुए**, जिन्हें चुना **नहीं** गया, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं है, भले ही उन्हें **प्रकाशित** किया जाए, पर उनके पास **कोई बहाना नहीं और उनके निर्बुद्धि मन अंधकारमय हो गए हैं।**

  यूहन्ना 3:19 और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि **ज्योति जगत में आई है**, और **मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना** क्योंकि उनके काम बुरे थे। उनके काम बुरे क्यों थे? जैसे यीशु ने कहा :

यूहन्ना 8:43-44 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि (1) तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते। (2) तुम अपने पिता शैतान से हो और (3) अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो।

V. परमेश्वर की इच्छा पूरी होगी :

वह दुःखी होकर, अफ़सोस मनाते हुए अपने हाथ नहीं झटकेगा कि उसका कोई बच्चा सफल नहीं हो पाया।

यूहन्ना 18:9 **जिससे कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था**, "जिन्हें **तू ने मुझे दिया** उनमें से **मैंने एक को भी नहीं खोया।**"

यशायाह 14:24 सेनाओं के यहोवा ने यह **शपथ खाई** है, "निस्सन्देह **जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा** और **जैसी योजना मैंने बनाई है, वैसी ही वह पूरी हो जाएगी**

यशायाह 46:9-11 प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि **मैं ही परमेश्वर हूँ**, अन्य कोई नहीं। मैं ही परमेश्वर हूँ, और मेरे तुल्य कोई नहीं है। 10 मैं **अन्त की बात आदि से** और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीनकाल से बताता आया हूँ। मैं कहता हूँ कि **मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।** 11 … **निश्चय मैंने यह कहा है और मैं ही इसे पूरा करूंगा। मैंने ही यह योजना बनाई है और निश्चय ही इसे पूरी करूंगा।**

यशायाह 55:11 उसी प्रकार मेरे मुँह से निकलनेवाला **वचन** होगा। **वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, वरन् मेरी इच्छा पूरी करेगा** और **जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे पूरा करके ही लौटेगा।**

भजन संहिता 33:11 **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहती है**, उसके हृदय की योजनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैं।

यूहन्ना 6:39 जिसने मुझे भेजा **उसकी इच्छा यह है**, कि **सब कुछ जो उसने मुझे दिया है, उसमें से कुछ भी न खोऊँ,** परन्तु अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊँ।

इफिसियों 1:11 उसी में जिसमें **हम भी** (जिन्हें पद 4 में उसने चुना) **उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने**

यहूदा 24 अब **जो** ठोकर खाने से तुम्हारी रक्षा **कर सकता** है, और **अपनी महिमा की उपस्थिति में तुम्हें निर्दोष और आनन्दित करके खड़ा कर सकता है,** 25 उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव, पराक्रम एवं अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

यदि कोई इस शिक्षा को लेकर यह कहता है, *"मैं तो अब जो चाहे कर सकता हूँ क्योंकि मेरे पाप क्षमा हो चुके हैं और मैं स्वर्ग जाऊँगा।"*

तो फिर दो विकल्प हैं :

1. वह **चुना हुआ** और परमेश्वर की संतान तो है पर उसको परमेश्वर के मार्ग की और परमेश्वर ने जो कुछ **उसके लिए** किया, उसकी **थोड़ी या बिलकुल समझ नहीं** है। इसलिए **प्रभु के लिए उसका प्रेम बहुत कम है**।

   1 कुरिन्थियों 3:1-3 **हे भाइयो,** मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में **बालक** हैं। 2 मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, 3 क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?

   वह यह नहीं जानता कि जब वह **पाप करता है** तो वह **शैतान को हमला करने** की अनुमति देता है जिससे उसको बहुत पीड़ा और विपत्ति आएंगी। (यूहन्ना 5:14)

   परन्तु अब भी उसके पास अनंत जीवन है क्योंकि वह परमेश्वर का चुना हुआ, ऊपर से जन्मा, और उसकी संतान है, उसका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा है तथा उसे अपने पापों के लिए यीशु के लहू के द्वारा क्षमा मिली है (2 कुरिन्थियों 5:19)।

परन्तु, **उसके पास दिन प्रति दिन का उद्धार नहीं है** क्योंकि उसके पाप शैतान को प्रवेश करने की सीमित पहुँच देता है, जिसके कारण उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

यूहन्ना 5:14 इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला। यीशु ने उससे कहा, "देख, तू चंगा हो गया है : फिर से **पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"**

इफिसियों 4:27 और न शैतान को अवसर दो।

2. या, वह **चुना हुआ नहीं है** और सचमुच वह परमेश्वर की संतानों में से नहीं है और इसी लिए उसमें **न तो यीशु के लिए कोई प्रेम** है और न ही प्रभु को भावता हुआ जीवन जीने की **कोई प्रेरणा है।** हो सकता है वह अपने मुँह से तो कहे कि "मैं विश्वास करता हूँ", लेकिन **अपने मन से उसका विश्वास न करे।**

रोमियों 10:9-13 यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने **मन में यह विश्वास करे** कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा। 10 क्योंकि धार्मिकता के लिये **मन से विश्वास किया जाता है,** और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है। 11 क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, "जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा।" 12 यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है। 13 क्योंकि, **"जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"**

यूहन्ना 14:23-24 यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, **"यदि कोई मुझ से प्रेम करता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा,** और मेरा पिता उस से प्रेम करेगा, और हम उसके पास जाएँगे तथा उसके साथ निवास करेंगे। 24 **जो मुझ से प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन का पालन नहीं करता।** और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है जिसने मुझे भेजा।

मत्ती 7:19-20 **जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता,** वह काटा और आग में डाला जाता है। 20 इस प्रकार **उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।**

मत्ती 13:37-39 उसने उनको उत्तर दिया, "**अच्छे बीज** का बोनेवाला **मनुष्य का पुत्र** है। 38 खेत संसार है, **अच्छा बीज राज्य की सन्तान,** और **जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं।** 39 जिस शत्रु ने उनको बोया **वह शैतान है**

1 यूहन्ना 2:19 वे **निकले** तो हम ही में से, पर **हम में के थे नहीं**; क्योंकि यदि वे **हम में के** होते, तो **हमारे साथ रहते**; पर निकल इसलिये गए कि यह **प्रगट हो** कि **वे सब हम में के नहीं हैं।**

2 पतरस 2:1 ... **झूठे भविष्यद्वक्ता** ... **झूठे उपदेशक** भी होंगे, जो ... **उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे,** और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

- **जिसने उन्हें मोल लिया है** 2 कुरिन्थियों 5:19 की ओर संकेत करता है : परमेश्वर ने मसीह में होकर **अपने साथ** संसार का **मेलमिलाप** कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया। उनके पाप यीशु के लहू के द्वारा क्षमा किए गए, और उन्हें मोल ले लिया गया हैं। परन्तु ...

- वे **परमेश्वर की संतान नहीं थे** और इसलिए वे कभी विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि ... यूहन्ना 8:44 तुम अपने पिता शैतान **से** हो 47 तुम परमेश्वर की ओर **से** नहीं हो। "से" का यूनानी मूलशब्द ἐκ है, जिसका अर्थ है → **मूल स्रोत में से निकलना।** उनका मूल स्रोत उनके पिता अर्थात शैतान **"से"** था।

2 थिस्सलुनीकियों 2:10 ... और **नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता।** 13 हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि **परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि** आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके **उद्धार पाओ,** 14 जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि **तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा**

को प्राप्त करो। 15 इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।

एक और प्रभावशाली पद आमोस 9:9 से है

"क्योंकि देखो, मैं आज्ञा देकर याकूब के घराने को सब जातियों में ऐसा छानूंगा जैसे अनाज छलनी में छाना जाता है, परन्तु एक भी पुष्ट दाना भूमि पर न गिरेगा।

हर एक का फटकना ईश्वरीय आज्ञा और अनुमति से होता है। शैतान को अय्यूब पर 1:6-8 पर ऊँगली रखने से पहले पूछना पड़ा, और ऐसे ही पतरस के लिए भी। लूका 22:31

वचन में लिखा है, "मैं याकूब के घराने को सब जातियों में छानूंगा या फटकूंगा।" यह उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण होगा। शैतान हो सकता है छलनी को इस उम्मीद से पकड़े कि वह "बीज" को नष्ट कर देगा; लेकिन स्वामी उसकी योजना को विफल करके जो अनमोल हैं उन्हें दुष्ट से अलग कर देगा। जो भूसी किसी मूल्य की नहीं होगी, वह हवा से उड़ा ली जाएगी और केवल शुद्ध बीज ही बचा रह जाएगा।

हमें यह पहचानना होगा कि यह अन्न को → उसके बीज को शुद्ध करने के लिए परमेश्वर का उपाय है, जो उसी प्रक्रिया के द्वारा होता है जिसके द्वारा शत्रु नाश करना चाहता है। उत्पत्ति 50:20 रोमियों 8:28

इस आशीषित तथ्य के द्वारा शांति पाएँ कि परमेश्वर हमारे हिलाए और छाने जाने का निर्देश इसलिए देता है कि हम अनंत लाभ के लिए पवित्र और शुद्ध हो सकें और हम उसके नाम को महिमा देनेवाले ठहरें।

परमेश्वर के बीज की **पूर्ण सुरक्षा** पर ध्यान दें; उसने यहाँ तक कि अन्न के सबसे छोटे दाने के लिए सुरक्षा का वायदा किया है। परमेश्वर स्वयं छानता है, और इसलिए यह उसके अपने परिवार के प्रति प्रेम भरे हृदय और चिंता के कारण आता है। और वह अपने बीज को जाति-जाति में से इकट्ठा करने के लिए हमें तैयार करता है और अपने पुत्र की दुल्हन के रूप में हमें सुसज्जित करता है।

इब्रानियों 12:5-12 "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। 6 क्योंकि **प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है**, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।" 7 तुम दु:ख को

ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें **पुत्र** (अर्थात परिपक्व पुत्र) जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? 8 यदि **वह ताड़ना** जिसके भागी सब होते हैं, **तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे।** 9 फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें। 10 वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, **कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।** 11 वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी **जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं**, बाद में उन्हें **चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता** है।

प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है, वह ऐसा चरवाहा है जो एक भी भेड़ नहीं खोएगा, ऐसा जोहरी जो एक भी हीरा नहीं खोएगा, ऐसी माँ जो किसी भी बच्चे को नहीं खोएगी, और वह ऐसा परमप्रधान प्रभु परमेश्वर है जो अपना एक भी अनमोल छुटकारा पाया हुआ बच्चा नहीं खोएगा। और मैं इस बात से पूरी तरह से आश्वस्त हूँ ... भले ही उन्होंने सुसमाचार को न सुना हो।

अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

1 तीमुथियुस 1:17

सम्बंधित अध्ययन www.treasurehisword.com

- ऊपर से जन्मे पृष्ठ 3
- लेपालकपन पृष्ठ 3
- आत्मिक युद्ध को समझना और दो बीज पृष्ठ 5

भजन 37:28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता; और **अपने भक्तों को न तजेगा। उनकी तो रक्षा सदा होती है,** परन्तु दुष्टों का वंश (अक्षरशः **बीज**) **काट डाला जाएगा।**